UTKARSH CLASSES

For Session 2022-23

RBSE

हिन्दी अनिवार्य

CLASS-XII

मॉडल पेपर्स

सॉल्यूशन सहित

RBSE द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम व ब्लूप्रिंट पर आधारित नवीनतम मॉडल पेपर

हिन्दी (अनिवार्य) (01)

कक्षा-XII

MODEL PAPER 6 (RBSE)

समय : 3 घंटे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खंड 'अ'

1. **बहुविकल्पी प्रश्न-**

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

विज्ञान आज के मानव-जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है। मानव-जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अभूतपूर्व आविष्कारों से अछूता नहीं रहा। इसी से आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है। आज विज्ञान ने पुरूष और नारी, साहित्यकार और राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और कृषक, पूँजीपति और श्रमिक, चिकित्सक और सैनिक, अभियन्ता और शिक्षक तथा धर्मज्ञ और तत्त्वज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में अपने अप्रतिम प्रदेय से अनुगृहीत किया है। आज समूचा परिवेश विज्ञानमय हो गया है। विज्ञान के चरण गृहिणी के रसोईघर से लेकर बड़ी-बड़ी प्राचीरों वाले भवनों और अट्टालिकाओं में ही दृष्टिगत नहीं होते, प्रत्युत वे स्थल और जल की सीमाओं को लाँघकर अंतरिक्ष में भी गतिशील हैं। वस्तुत: विज्ञान अद्यतन मानव की सबसे बड़ी शक्ति बन गया है। इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणि जगत् का शिरोमणि बन सका है। विज्ञान के अनुग्रह से वह सभी प्रकार की सुविधाओं और संपदाओं का स्वामित्व प्राप्त कर चुका है। अब वह ऋतु-ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत एवं संत्रस्त नहीं है। विद्युत ने उसे आलोकित किया है, उष्णता और शीतलता दी है, बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत भी दी है। मनोरंजन के विविध साधन उसे सुलभ हैं। यातायात एवं संचार के साधनों के विकास के समय और स्थान की दूरियाँ बहुत कम हो गई हैं और समूचा-विश्व एक परिवार-सा लगने लगा है। कृषि और उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन की तीव्र वृद्धि होने के कारण आज दुनिया पहले से अधिक धन-धान्य से संपन्न है। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन अभिनंदनीय है। विज्ञान के सहयोग से मनुष्य धरती और समुद्र के अनेक रहस्य हस्तामलक करके अब अंतरिक्ष लोक में प्रवेश कर चुका है। सर्वोपरि, विज्ञान ने मनुष्य को बौद्धिक विकास प्रदान किया है और वैज्ञानिक चिंतन-पद्धति दी है। वैज्ञानिक चिंतन-पद्धति से मनुष्य अंधविश्वासों और रूढ़ि-परंपराओं से मुक्त होकर स्वस्थ एवं संतुलित ढंग से सोच-विचार कर सकता है और यथार्थ एवं सम्यक् जीवन जी सकता है। इससे मनुष्य के मन को युगों के अंधविश्वासों, भ्रमपूर्ण और दकियानूसी विचारों, भय और अज्ञानता से मुक्ति मिली है। विज्ञान की यह देन स्तुत्य है। मानव को चाहिए कि वह विज्ञान की इस समग्र देन को रचनात्मक कार्यों में सुनियोजित करें।

(i) आज विज्ञान को मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग क्यों माना जा सकता है? [1]

(अ) विज्ञान के आविष्कार अभूतपूर्व हैं।
(ब) विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में मानव को प्रभावित किया है।
(स) विज्ञान ने आर्थिक उन्नति प्रदान की है।
(द) आधुनिक युग विज्ञान का युग है।

(ii) विज्ञान के चरण गतिशील क्यों कहे जा सकते हैं? [1]

(अ) विज्ञान की तीव्र गति के कारण
(ब) यातायात के साधन आविष्कृत करने के कारण
(स) विज्ञान के उत्तरोतर विभिन्न दिशाओं में उन्मुख होने के कारण
(द) प्रगतिशील विचारधारा के कारण

(iii) विज्ञान के सहयोग से मनुष्य ने कहाँ प्रवेश कर लिया है? [1]

(अ) मनुष्य के हृदय में (ब) अंतरिक्ष में
(स) विदेशों में (द) समुद्र में

(iv) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति के प्रभाव से व्यक्ति कैसा जीवन जी सकता है? [1]

(अ) यथार्थ (ब) सम्यक्
(स) (अ) और (ब) दोनों (द) बनावटी

(v) लेखक की दृष्टि में विज्ञान की सबसे बड़ी देन क्या है? [1]

(अ) संचार सुविधाएँ
(ब) विद्युत का आविष्कार
(स) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति
(द) चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाएँ

(vi) **प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?** [1]
(अ) विज्ञान का मानव जीवन पर प्रभाव
(ब) वैज्ञानिक चिंतन और मानव
(स) विज्ञान के गतिशील चरण
(द) विज्ञान के आविष्कार

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए-

यह अंतिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा ना हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वहाँ रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयनद्वय
"धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बृद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन
"यह है उपाय" कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन
"कहती थीं माता, मुझको सदा राजीव नयन।
दो नील कमल है शेष अभी, यह पुनश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

(vii) **राम की माता उन्हें क्या कहती थी?** [1]
(अ) रघुनंदन (ब) राम
(स) राजीवनयन (द) कमलनयन

(viii) **राम की शक्तिपूजा में कमल पुष्प कौन चुरा लेता है?** [1]
(अ) रावण (ब) जाम्बवान
(स) महाशक्ति (द) हनुमान

(ix) **राम ने किसको पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की?** [1]
(अ) रावण (ब) मारीच
(स) कंस (द) मेघनाद

(x) **'दो नील कमल है शेष अभी' राम किन नील-कमलों की बात कर रहे है?** [1]
(अ) नेत्र (ब) कर
(स) पुष्प (द) उपर्युक्त सभी

(xi) **'नीलकमल' शब्द में अलंकार है-** [1]
(अ) उपमा (ब) रूपक
(स) उत्प्रेक्षा (द) यमक

(xii) **'नयन' शब्द के पयार्यवाची शब्द है-** [1]
(अ) नेत्र, आँख, चक्षु
(ब) चक्षु, कर, नेत्र
(स) दृग, लोचन, चरण
(द) लोचन, नेत्र, चरण

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
(i) **.................. से देवनागरी लिपि की उत्पत्ति हुई है।** [1]
(ii) **व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है, उसे .... कहते हैं।** [1]
(iii) **'शाब्दी' एवं 'आर्थी' ....शब्द शक्ति के भेद है।** [1]
(iv) **"इंग्लैण्ड दो विकेट से हारा।" वाक्य में .... शब्द शक्ति है।** [1]
(v) **जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता बताई जाए उसे .... कहते है।** [1]
(vi) **'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल।' काव्य-पंक्ति में .... अलंकार है।** [1]

3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए।
(i) **निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए-** [1]
A- Eligible- B- Majority-
(ii) **'राजपत्र' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द लिखिए।** [1]
(iii) **फ़ीचर का प्रमुख उद्देश्य क्या है?** [1]
(iv) **'सिल्वर वैडिंग' कहानी किस द्वन्द्व पर आधारित है?** [1]
(v) **यशोधर बाबू को अपनी पत्नी की कौन-सी बात पसंद नहीं थी?** [1]
(vi) **'जूझ' उपन्यास के नायक जकाते का आनन्दा नाम किसने रखा था?** [1]
(vii) **लेखक ने 'जूझ' उपन्यास मूलरूप से किस भाषा में लिखा और उसका हिन्दी अनुवाद किसने किया?** [1]
(viii) **मुअनजो-दड़ो के प्रसिद्ध जल कुण्ड की विशेषताएँ लिखिए।** [1]
(ix) **"प्रकृति ही तो ऐसा वरदान है जिसका कोई सानी नहीं।" ऐन फ्रैंक ने प्रकृति के संबंध में ऐसा क्यों कहा है?** [1]
(x) **'मैं निज उर के उद्गार लिये फिरता हूँ' पंक्ति से बच्चनजी का क्या आशय है?** [1]
(xi) **राजपुरोहित और मैनेजर लुट्टन का विरोध क्यों कर रहे थे?** [1]

खंड 'ब'

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए-

4. रेडियो के लिए समाचार-लेखन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? [2]
5. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के योगदान को स्पष्ट कीजिए। [2]
6. 'कोरोना वायरस महामारी' विषय पर एक आलेख लिखिए। [2]
7. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे? [2]
8. 'किशोर और युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं'-पतंग कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [2]
9. 'बाज़ार जाओ तो खाली मन न हो'- कहने से लेखक का क्या आशय है? [2]

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

10. समय पर वर्षा न होने से गाँववासी कौन-कौनसे उपाय करते थे? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [2]

खंड 'स'

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

11. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती हैं' कैसे? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

कवि ने गरीबी के लिए 'गरबीली', अंधकार अमावस्या के लिए 'दक्षिण ध्रुवी', उजेले के लिए 'रमणीय' तथा 'अँधेरे' के लिए 'पाताली' विशेषणों का प्रयोग क्या प्रकट करने के लिए किया है? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

12. 'ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी थी' -'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

अथवा

चार्ली चैप्लिन ने दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को कैसे तोडा है? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) [3]

13. उमाशंकर जोशी का कवि- परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

अथवा

रजिया सज्जाद जहीर का लेखिका परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) [4]

14. "टूटे-फूटे खण्डहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिन्दगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं"- इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

अथवा

'काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला ......।' क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी-लेखन का कारण छिपा हैं? (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) [6]

खंड 'द'

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

अथवा

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?
आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा
देता है?
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुख क्या है
जल्दी बताइए वह दुख बताइए
बता नहीं पाएगा।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-[2+4=6]

सेवक-धर्म में हनुमानजी से स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है- नाम है लछमिन अर्थात् लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है।

अथवा

जब उसका सामान कस्टम पर जाँच के लिए बाहर निकाला जाने लगा तो उसे एक झिरझिरी-सी आई और एकदम से उसने फ़ैसला किया कि मुहब्बत का यह तोहफ़ा चोरी से नहीं जाएगा, नमक कस्टमवालों को दिखाएगी वह। उसने जल्दी से पुड़िया निकाली और हैंडबैग में रख ली, जिसमें उसका पैसों का पर्स और पासपोर्ट आदि थे। जब सामान कस्टम से होकर रेल की तरफ़ चला तो वह एक कस्टम अफ़सर की तरफ़ बढ़ी।

17. संस्था प्रधान की ओर से पुलिस अधीक्षक, यातायात को एक उचित प्रारूप में पत्र लिखिए जिसमें अपने विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षु अनुज्ञप्ति - पत्र शिविर (लर्निंग लाइसेन्स कैम्प) लगाने का अनुरोध किया गया हो। [4]

अथवा

जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने या हटाने, नामावली सुधार को लेकर अधिसूचना का एक प्रारूप तैयार कीजिए।

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए। (शब्द सीमा 300 शब्द) [5]

(1) 26 जनवरी गणतंत्र दिवस
(2) विश्व योग दिवस
(3) मातृ दिवस
(4) एक रेल-दुर्घटना

उत्तरमाला मॉडल पेपर – 06

खंड 'अ'

1. **(i) [b]** विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में मानव को प्रभावित किया है।
(ii) [c] विज्ञान के उत्तरोतर विभिन्न दिशाओं में उन्मुख होने के कारण
(iii) [ब] अंतरिक्ष में
(iv) [स] (अ) और (ब) दोनों
(v) [द] चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाएँ
(vi) [ब] वैज्ञानिक चिंतन और मानव
(vii) [स] राजीवनयन
(viii) [अ] रावण
(ix) [अ] रावण
(x) [अ] नेत्र
(xi) [अ] उपमा
(xii) [अ] नेत्र, आँख, चक्षु

2. **(i)** 'ब्राह्मी' **(ii)** 'भाषा' **(iii)** व्यंजना
(iv) लक्षणा **(v)** उपमान **(vi)** पुनरुक्ति प्रकाश

3.
(i) **A- Eligible-** पात्र **B- Majority-** बहुमत, वयस्कता
(ii) 'राजपत्र' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द है- Gazette
(iii) फ़ीचर का प्रमुख उद्देश्य ज्ञानवर्द्धन करना है।
(iv) यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। उनके बच्चे आधुनिक रंग-ढंग और प्रगति के दीवाने हैं। पूरी कहानी इसी द्वन्द्व पर आधारित है।
(v) यशोधर बाबू को अपनी पत्नी का बुढ़ापे में सजना-सँवरना और फैशन वाले कपड़े पहनना पसंद नहीं था।
(vi) 'जूझ' उपन्यास के नायक जकाते का आनंदा नाम मास्टर मंत्री ने रखा था।
(vii) लेखक ने 'जूझ' उपन्यास मूलरूप से मराठी भाषा में लिखा और उसका हिन्दी अनुवाद केशव प्रथम वीर ने किया।
(viii) मुअनजो-दड़ो का प्रसिद्ध जल कुण्ड अद्वितीय वास्तु कला से स्थापित था। उसका तल व दीवारें मजबूत थीं व पानी निकास की पक्की नालियाँ थीं।
(ix) ऐन फ्रैंक ने प्रकृति के संबंध में ऐसा इसलिए कहा है, क्योंकि प्रकृति के नाना दृश्यों से हमारे मन को आनन्द और शान्ति मिलती है। इसे कोई भी प्राप्त कर सकता है।
(x) इसमें कवि का आशय है कि वह स्वयं के हृदय के उद्गार अर्थात् भावनाएँ, जो दुःख-सुख, निराशा, संवेदना, वेदना, निस्सारता, संसार की नश्वरता आदि से जुड़ी हैं उन्हें अपने हृदय तक ही सीमित रखते हैं। उन्हें साथ लिये वे अपना जीवन यापन करते हैं।
(xi) राजपुरोहित और मैनेजर लुट्टन का विरोध इसलिए कर रहे थे क्योंकि लुट्टन क्षत्रिय नहीं था।

खंड 'ब'

4. रेडियो समाचार-लेखन में दो बुनियादी बातों का ध्यान रखना जरूरी है-
(1) समाचार साफ-सुथरी और टाइप कॉपी में हों।
(2) डेडलाइन, सन्दर्भ और संक्षिप्ताक्षर स्पष्ट अंकित हों, ताकि समाचारवाचक को कोई दिक्कत न हो। समाचार-लेखन के आरम्भ में बोलचाल की तिथि-वार आदि का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

5. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीविजन, इण्टरनेट, ई-मेल आदि आते हैं। वर्तमान में इनके द्वारा संचार की भौगोलिक दूरियाँ कम हुई हैं, मनोरंजन के साधन बढ़े हैं तथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों से अनेक सुविधाओं का विस्तार हुआ है। इस तरह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

6. कोरोना वायरस को 'कोविड 19' के नाम से भी जाना जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO ने 11 मार्च, 2020 को कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया। यह वायरस संपूर्ण विश्व में फैल गया। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है, इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, साँस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, आदि बीमारियाँ और यहाँ तक कि मौत भी हो सकती है। कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए बहुत सावधानी अपनानी चाहिए। बार-बार अपने हाथ को साबुन से धोना चाहिए, खाँसते व छींकते समय टिशु पेपर का इस्तेमाल करना चाहिए और प्रयोग के बाद उसे कूड़ेदान में फेंककर हाथ को साबुन से धो लेना चाहिए। सरकार के बताए नियमों का दृढ़ता से पालन करें, ताकि हमारा देश शीघ्र ही रोगमुक्त हो जाए।

7. पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते फिरते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता-पिता की राह देखते रहते हैं कि माता-पिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। साथ-साथ वे माँ-बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता-पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम-प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

8. किशोर और युवा वर्ग में क्षमता व इच्छाशक्ति चरम सीमा पर होती है। वे स्वयं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसको पाने की हर संभव कोशिश करते हैं। इनकी आँखों में आसमान की ऊँचाइयों को पाने के सपने होते हैं।

9. 'मन खाली न होने' का तात्पर्य यह है कि हमको बाज़ार जाते समय यह ठीक पता होना चाहिए कि वहाँ जाकर क्या खरीदना है, हमें किस चीज की ज़रूरत है? यह पता होने पर हम अपनी आवश्यकता की चीज़ें ही खरीदेंगे और बाज़ार के आकर्षण से बचेंगे और फिजूलखर्ची भी नहीं करेंगे। बाज़ार के जादू की जकड़ से बचने का यह सीधा-सा उपाय है।

10. गाँववासी अपनी आस्था के अनुसार इन्द्रदेवता को प्रसन्न करने के लिए सामूहिक रूप से पूजा-पाठ कराते, कथा-कीर्तन एवं रात्रि-जागरण आदि सारे कार्य करते। इन सब उपायों के बाद भी वर्षा नहीं होती, तो इंदर सेना आकर इन्द्रदेवता से जल-वर्षण की प्रार्थना करती थी।

खंड 'स'

11. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन

UTKARSH CLASSES

बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं।

अथवा

कवि गरीब तो है परन्तु इसके कारण कोई हीनता का भाव उसके मन में नहीं है, उसने अपनी गरीबी पर गर्व प्रकट करने के लिए उसको गरबीली कहा है। अमावस्या के अन्धकार को ज्यादा घना दिखाने के लिए कवि ने 'दक्षिण ध्रुवी' विशेषण का प्रयोग किया है। दक्षिणी ध्रुव पर छ: महीने लम्बी रात होती है। कवि के प्रियतम का व्यक्तित्व उजाले के समान आकर्षक है तथा कवि के जीवन में सर्वत्र छाया हुआ है। उसके आकर्षण और प्रभाव को व्यक्त करने के लिए 'रमणीय' शब्द का प्रयोग कवि ने किया है। घनघोर अन्धकार को प्रकट करने के लिए उसे 'पाताली' विशेषण द्वारा व्यक्त किया गया है।

12. लुट्टन सिंह जब जवानी के जोश में आकर चाँद सिंह नामक मँजें हुए पहलवान को ललकार बैठा तो सारा जनसमूह, राजा और पहलवानों का समूह आदि की यह धारणा थी कि यह कच्चा किशोर जिसने कुश्ती कभी सीखी नहीं है, पहले दाँव में ही ढेर हो जाएगा। हालाँकि लुट्टन सिंह की नसों में बिजली और मन में जीत का जज्बा उबाल खा रहा था। उसे किसी की परवाह न थी। हाँ, ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेंच का मार्गदर्शन जरूर मिल रहा था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने 'शेर के बच्चे' को खूब धोया, उठा-उठाकर पटका और हरा दिया। इस जीत में एकमात्र ढोल ही उसके साथ था। अत: जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा और उसे प्रणाम किया।

अथवा

चार्ली की फिल्में बच्चे-बूढ़े, जवान, वयस्कों सभी में समान रूप से लोकप्रिय हैं। यह चैप्लिन का चमत्कार ही है कि उनकी फिल्मों को पागलखाने के मरीजों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइंस्टाइन जैसे महान प्रतिभावाले व्यक्ति तक एक स्तर पर कहीं अधिक सूक्ष्म रसास्वाद के साथ देख सकते हैं। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि हर वर्ग में लोकप्रिय इस कलाकार ने फिल्म-कला को लोकतांत्रिक बनाया और दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। कहीं-कहीं तो भौगोलिक सीमा, भाषा आदि के बंधनों को भी पार करने के कारण इन्हें सार्वभौमिक कलाकार कहा गया है।

13. गुजराती कविता के जाने-माने कवि उमाशंकर जोशी का जन्म सन् 1911 में गुजरात में हुआ था। इन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा तथा आम जिन्दगी के अनुभव से परिचय करवाया। इन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई में भाग लिया तथा जेल भी गए। इनकी काव्य-कृतियाँ-विश्व शांति, गंगोत्री निशिथ, प्राचीना, आतिथ्य, बसंत वर्षा, महाप्रस्थान, अभिज्ञा (एकांकी); सापनाभारा, शहीद (कहानी); श्रावणी मेणो विसामो (उपन्यास) तथा 'संस्कृति' पत्रिका का सम्पादन भी किया। साहित्य की नयी भंगिमा व स्वर देने वाले उमाशंकर का निधन सन् 1988 में हुआ।

अथवा

रजिया सज्जाद जहीर का जन्म 15 फरवरी, 1917 को राजस्थान के अजमेर में हुआ था। इन्होंने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त कर लखनऊ के गर्ल्स कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। 1965 में इनकी नियुक्ति सोवियत सूचना विभाग में हुई। ये मूलतः उर्दू की कहानी लेखिका हैं। इन्होंने कहानी, उपन्यास व बाल साहित्य लिखा है। कहानी संग्रह 'जर्द गुलाब' है। सामाजिक यथार्थ व मानवीय गुणों का सहज सामंजस्य इनकी कहानियों की विशेषता है। इन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जिनमें नेहरू पुरस्कार, लेखिका संघ अवार्ड, उर्दू अकादमी पुरस्कार आदि हैं। 18 दिसम्बर, 1979 को इनका निधन हो गया था।

14. सन् 1922 ई. में राखाल दास बनर्जी यहाँ एक स्तूप की खोज में आये लेकिन खुदाई में यहाँ एक समृद्ध सभ्यता प्राप्त हुई। यह सभ्यता विश्व के पुरातत्वविदों की दृष्टि में संसार की सर्वश्रेष्ठ सभ्यता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में प्राप्त टूटे-फूटे खण्डहरों से सिद्ध होता है कि कभी यहाँ एक सुसंस्कृत एवं बुद्धिमान इंसान निवास करता था। आज से पाँच हजार वर्ष पहले हमारे पूर्वज कितना समृद्ध एवं कलापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे, इन खण्डहरों से हमारे मन में यही भाव जागृत होते हैं। साथ ही हमें अपने ऊपर गर्व भी होता है कि गत कई शताब्दियों तक गुलाम रहने वाले हम सदैव ही इतने दरिद्र और कमजोर नहीं थे। हमारे पूर्वज उस सभ्यता के प्रतिनिधि थे जो संसार में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। आज हमारा मन दुखी भी होता है कि वे कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने हमारे पूर्वजों को शहरों को छोड़ पलायन करने को मजबूर किया था। यदि इस सभ्यता की निरंतरना बनी रहती तो हम आज अत्यन्त समृद्ध जीवन जी रहे होते और सारा विश्व हमें सम्मान की दृष्टि से देख रहा होता। सिंधु घाटी सभ्यता की खोज ने हर भारतीय के मन में एक आत्मगौरव का भाव भरा हैं।

अथवा

ऐन एक साधारण लड़की थी। वह अपनी पढ़ाई सामान्य ढंग से करती थी, परंतु उसे सबसे अक्खड़ माना जाता था। उसे हर समय डाँट-फटकार सहनी पड़ती थी। वह एक जगह लिखती भी है-"मेरे दिमाग में हर समय इच्छाएँ, विचार, आशय तथा डाँट-फटकार ही चक्कर खाते रहते हैं। मैं सचमुच उतनी घमंडी नहीं हूँ जितना लोग मुझे समझते हैं। मैं किसी और की तुलना में अपनी नयी कमजोरियों और खामियों को बेहतर तरीके से जानती हूँ।" एक अन्य स्थान पर वह लिखती है-"लोग मुझे अभी भी इतना नाकघुसेड़ और अपने आपको तीसमारखाँ समझने वाली क्यों मानते हैं?" वह यह भी लिखती है-"कोई मुझे नहीं समझता" इस प्रकार ऐन की टिप्पणियों से पता चलता है कि अज्ञातवास में उसे समझने वाला कोई नहीं था।

वह स्वयं को बदलने की कोशिश करती थी, परंतु फिर किसी-न-किसी के गुस्से का शिकार हो जाती थी। उपदेशों, हिदायतों से वह उकता चुकी थी तथा अपनी भावनाएँ 'किट्टी' नामक गुड़िया के माध्यम से व्यक्त की। हर मामले पर उसकी अपनी सोच है

UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

चाहे वह मिस्टर डसेल का व्यक्तित्व हो या महिलाओं के संबंध में विचार। अकेलेपन के कारण ही उसने डायरी में अपनी भावनाएँ लिखीं।

खंड 'द'

15. **संदर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश कवि 'उमाशंकर जोशी' द्वारा लिखित उनकी पहली कविता 'छोटा मेरा खेत' से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें स्वयं को कृषक के समान मानकर अपने भावों की खेती कर साहित्य रचना पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या- कवि स्वयं को किसान समान बताते हुए कहते हैं कि कागज का एक पन्ना मेरे पास छोटा-सा चौकोर खेत के समान है। किसान जमीन पर बीज बोता है, जबकि मैं कागज पर अपनी रचना शब्दबद्ध करता हूँ - उगाता हूँ। जिस प्रकार धरती पर फसल उगाने के लिए बीज बोया जाता है उसी प्रकार मेरे मन में भी भावों का अंधड़ आकर (भावरूपी) बीज बो जाता है। अर्थात् भावरूपी बीज हृदय रूपी खेत में बोया जाता है।

जिस प्रकार धरती पर बोया गया बीज हवा, पानी, खाद आदि को पीकर पूरी तरह गल जाता है और तब उसके अंकुर, पत्ते और पुष्प निकल आते हैं, उसी प्रकार मेरे मन में उठे हुए भाव कल्पना रूपी खाद-पानी को पीकर उस भाव को अहंमुक्त कर देते हैं तथा सर्व-साधारण हिताय का विषय बना देते हैं। तब शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं, उनके साथ भाव रूपी पत्ते और पुष्प पल्लवित-विकसित हो जाते हैं। नये पत्ते-पुष्पों के भार से झुके हुए पौधे की तरह मेरी भावाभिव्यक्ति भी झुक जाती है, अर्थात् सर्वजन के लिए समर्पित हो जाती है।

विशेष-

(i) कवि ने कल्पना द्वारा काव्य-रचना-कर्म को व्यक्त किया है।

(ii) रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार तथा प्रतीकात्मकता की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

(iii) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित 'कैमरे में बंद अपाहिज' शीर्षक कविता से लिया गया है। इस कविता के रचयिता रघुवीर सहाय हैं।

प्रसंग- इस कविता में कवि ने मीडिया की संवेदनहीनता का चित्रण किया है। कवि का मानना है कि मीडिया वाले दूसरे के दु:ख को भी व्यापार का माध्यम बना लेते हैं।

व्याख्या- कवि मीडिया के लोगों की मानसिकता का वर्णन करता है। मीडिया के लोग स्वयं को समर्थ व शक्तिशाली मानते हैं। वे ही दूरदर्शन पर बोलते हैं। अब वे एक बंद कमरे अर्थात् स्टूडियो में एक कमजोर व्यक्ति को बुलाएँगे तथा उससे प्रश्न पूछेंगे। क्या आप अपाहिज हैं? यदि हैं तो आप क्यों अपाहिज हैं? क्या आपका अपाहिजपन आपको दु:ख देता है? ये प्रश्न इतने बेतुके हैं कि अपाहिज इनका उत्तर नहीं दे पाएगा, जिसकी वजह से वह चुप रहेगा। इस बीच प्रश्नकर्ता कैमरे वाले को निर्देश देता है कि इसको (अपाहिज को) स्क्रीन पर बड़ा-बड़ा दिखाओ। फिर उससे प्रश्न पूछा जाएगा कि आपको कष्ट क्या है? अपने दु:ख को जल्दी बताइए। अपाहिज इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देगा क्योंकि ये प्रश्न उसका मजाक उड़ाते हैं।

विशेष-

(i) मीडिया की मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।

(ii) व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।

(iii) भाषा सहज व सरल है।

16. **संदर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा लिखित 'भक्तिन' संस्मरण से लिया गया है।

प्रसंग- इसमें लेखिका ने 'भक्तिन' के नाम की विशेषता उसके भाग्य से जोड़कर बताई है।

व्याख्या- लेखिका बताती है कि सीधी-सरल स्वभाव की भक्तिन सेवा धर्म का पालन, करने में हनुमानजी से भी होड़ रखती थी। वह एक गाय पालने वाले गोपालिका की बेटी थी। उसका नाम लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था। लेखिका बताती है कि जैसे उनका नाम महादेवी था अर्थात् महानदेवी, उसी प्रकार उसका नाम लक्ष्मी था जो कि धन की देवी कही जाती है।

महादेवी कहती है, जिस प्रकार नाम अनुसार वह महान देवी नहीं बन पाई उसी प्रकार भक्तिन भी नामानुसार लक्ष्मी अर्थात् धन-धान्य से पूर्ण नहीं थी। लक्ष्मी की धन-सम्पदा भक्तिन के सिकुड़ी हुई भाग्य-रेखाओं में बँध ही नहीं सकी। अंत में लेखिका कहती है वैसे तो इस संसार में सभी को अपने-अपने नाम के विरोधाभास के साथ जीना ही पड़ता है। सभी अपने नाम के विपरीत ही होते हैं या फिर भाग्य-समय उन्हें वैसा बना देता है।

विशेष-

(i) लेखिका ने भक्तिन की सेवा-प्रवृत्ति एवं उसके नाम पर प्रकाश डाला है।

(ii) भाषा सीधी-सरल व सहज है। संस्कृत के कहीं-कहीं कठिन शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अथवा

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश लेखिका रजिया सज्जाद जहीर द्वारा लिखित 'नमक' पाठ से लिया गया है।

प्रसंग- पाकिस्तान से भारत की यात्रा के दौरान कस्टम जाँच का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या- लेखिका बता रही है कि जब भारत वापस आते समय सफिया का सामान कस्टम पर जाँच के लिए निकाला जाने लगा तो एक बार को वे थोड़ी डर गई। फिर अचानक से उन्होंने एक फैसला लिया कि प्रेम से ले जाया जाने वाला तोहफा या उपहार झूठ बोलकर या चोरी से छिपाकर नहीं ले जाया जाएगा। वह दृढ़ निश्चय कर लेती है कि वह यह नमक कस्टम वालों को दिखायेगी।

यह सोचते ही उन्होंने जल्दी से नमक की पुड़िया को फलों की टोकरी से निकालकर अपने हाथ में पकड़े बैग में रख ली, जिस बैग में उनके पैसे, पासपोर्ट तथा अन्य जरूरी सामान व कागजात रखे थे। जब बाकी सामान कस्टम से होकर रेल की तरफ चला तो वह एक कस्टम अफसर की तरफ नमक की सच्चाई बताने के लिए बढ़ चली।

विशेष-

(i) लेखिका ने सफिया की संवेदनशीलता एवं सच्चाई को व्यक्त किया है।

(ii) भाषा सुगम व भावपूर्ण है। हिन्दी-अंग्रेजी शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

17. श्रीमान् पुलिस अधीक्षक महोदय,
यातायात पुलिस,
जालौर।
विषय - विद्यार्थियों के लिए लर्निंग लाइसेन्स कैम्प लगवाने के सम्बन्ध में।
महोदय,
निवेदन है कि इस वर्ष हमारे विद्यालय में आसपास के क्षेत्रों से अनेक छात्रों ने उच्च कक्षाओं में प्रवेश लिया है। ये सभी नव प्रवेशार्थी वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग लाइसेन्स बनवाने के इच्छुक हैं। परन्तु मुख्य परिवहन कार्यालय दूर होने से लर्निंग लाइसेन्स नहीं बनवा पा रहे हैं। यदि इस सम्बन्ध में हमारे विद्यालय परिसर में ही एक कैम्प लगाकर यह कार्य किया जावे तो सभी को सुविधा होगी।
अतः आपसे प्रार्थना है कि परिवहन विभाग को निर्देश देकर हमारे विद्यालय में प्रशिक्षु चालक अनुज्ञप्ति - पत्र हेतु शिविर लगवाने की कृपा करें। इसके लिए संस्था की ओर से पूर्ण सहयोग दिया जावेगा। हम आपके आभारी रहेंगे।
धन्यवाद!
दिनांक 26/8/20XX
भवदीय,
ह . ...
प्रधानाचार्य
राज. उच्च मा. विद्यालय,
भीनमाल।

अथवा

कार्यालय, जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर
अधिसूचना
दिनांक 20 फरवरी, 20XX
क्रमांक : 231/29 - 36(6)20XX
सर्वसाधारण को लोकसभा सामान्य निर्वाचन, 20XX के दृष्टिगत सूचित किया जाता है कि आयुक्त, निर्वाचन आयोग, राजस्थान के निर्देशानुसार मतदाता नामावली में नाम जोड़ने, नाम हटाये जाने तथा नामावली की प्रविष्टियों में त्रुटि - सुधार करने हेतु दिनांक 23 - 24 फरवरी, 20XX को दो दिवसीय शिविर का आयोजन प्रत्येक मतदान स्थल, तहसील/उपजिलाधिकारी मुख्यालय, ब्लॉक एवं जिला निर्वाचन कार्यालय, अजमेर में किया जायेगा।
अतएव समस्त मतदाता नागरिक उक्त शिविरों में स्वयं उपस्थित होकर निर्वाचन नामावली का अवलोकन करें और यदि कुछ संशोधन करना चाहें तो निर्धारित प्रपत्र में आवेदन कर निर्वाचन नामावली/मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करायें। अधिक जानकारी के लिए जिला निर्वाचन कार्यालय में स्थापित टोल फ्री नम्बर 1950, 1800804012 पर सम्पर्क कर सकते हैं।
जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी, अजमेर

18.

(1) 26 जनवरी गणतंत्र दिवस

(i) 26 जनवरी गणतंत्र दिवस का परिचय- भारत के लोगों के लिये 26 जनवरी का दिन गणतंत्र का दिन है। यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है इसलिये इसे 26 जनवरी, 1950 से हर साल मनाया जा रहा है। हर साल सर्दी की ऋतु में भारत की कोटि-कोटि जनता राष्ट्रीय पर्व को मनाती है। इस दिन पाठशालाएँ, कॉलेज, दफ्तर, बैंक, सभी सरकारी कार्यालय तथा मुख्य बाजार बंद रहते हैं। लोग बड़े उत्साह से ध्वजवंदन के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। राष्ट्रगीत गाते समय सबके हृदय में राष्ट्रप्रेम उमड़ पड़ता है। भारत के सैकड़ों नगरों तथा लाखों गाँवों में 26 जनवरी का दिन देशप्रेम तथा राष्ट्रीयता की नई लहर पैदा करता है।

(ii) गणतंत्र दिवस का इतिहास- लंबे समय तक हमारी मातृभूमि भारत पर ब्रिटिश शासन का राज रहा है और भारत के लोगों ने सालों तक गुलामी की है। जिसके कारण भारत के लोगों को ब्रिटिश शासन द्वारा बनाये गये कानूनों का पालन करना पड़ता था। लंबे संघर्ष के बाद भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने अंततः 15 अगस्त, 1947 को भारत को आजादी दिलाई। आजादी के लगभग ढाई साल बाद यानी कि 26 जनवरी, 1950 को भारत देश ने अपना संविधान लागू कर दिया और भारत ने खुद को एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में घोषित कर दिया।
भारतीय संविधान को हमारी संसद ने लगभग 2 साल 11 महीने और 18 दिनों के बाद 26 जनवरी, 1950 को पास किया गया। भारत ने खुद को संप्रभु, लोकतांत्रिक, गणराज्य घोषित कर दिया। जिसके बाद 26 जनवरी को भारत के लोगों द्वारा गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

(iii) भारत में गणतंत्र दिवस का दिन- भारत में रह रहे लोगों और साथ ही विदेश में भी रहने वाले भारतीयों के लिए गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाना बहुत ही सम्मान की बात है। स्कूलों में, कॉलेजों में, ऑफिस में आदि हर जगह 26 जनवरी को भारत देश का झंडा फहराया जाता है और काफी सारे प्रोग्राम होते हैं, जिनकी तैयारी महीनों पहले से होने लगती हैं। भारत के लोग 26 जनवरी को पूरे उत्साह और खुशी के साथ मनाते हैं। सुरक्षा कारणों से लोगों की आवाजाही को इंडिया गेट पर रोक दिया जाता है।
26 जनवरी के दिन पूरे भारत के सभी राज्यों की राजधानियों और राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में भी एक बड़े पैमाने पर उत्सव का खास प्रबंध किया जाता है। आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रपति द्वारा ध्वजारोहण और राष्ट्रगान के साथ की जाती है। इतना ही नहीं इसके बाद तीनों सेनाओं द्वारा परेड होती है। इतना ही नहीं साथ ही राज्यों की झाँकियों की प्रदर्शनी, पुरस्कार वितरण, मार्च पास्ट आदि क्रियाएँ भी होती हैं और अंत में पूरा भारत का वातावरण "जन गण मन" से गूँजता है।
गणतंत्र की पूर्व संध्या को हमारे राष्ट्रपति दूरदर्शन पर राष्ट्र के नाम अपना संदेश प्रसारित करते हैं। इस संदेश में वे देश से जुड़ी हुई समस्याओं की चर्चा करते हैं और देशवासियों तथा विदेशों में बसे भारतीयों का अभिनंदन करते हैं। गणतंत्र दिवस के दिन यानी 26 जनवरी को मकानों की खिड़कियों पर छोटे-छोटे तिरंगे झंडों की शोभा दर्शनीय होती है। आकाशवाणी के द्वारा इस दिन एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।
इस समारोह में देश के विभिन्न प्रदेशों के कलाकार अपने-अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। विदेशी मेहमानों की उपस्थिति से इस समारोह की शोभा और भी बढ़ जाती। देश के सभी प्रांतों की राजधानियों में भी सैनिक परेडों का आयोजन होता है। संबंधित राज्यों के राज्यपाल इन परेडों की सलामी लेते हैं।

UTKARSH CLASSES
Utkarsh Classes & Edutech Pvt. Ltd.

(iv) निष्कर्ष- सचमुच, गणतंत्र दिवस अथवा 26 जनवरी हमारा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार है। यह हमारा गणतंत्र पर्व है। यह प्रजातंत्र भारत के गौरव और स्वाभिमान का पावन दिवस है। इस दिन के लिए हमारे कई वीर जवानों ने अपना बलिदान दिया है तथा कई महान व्यक्ति ने अपना जीव समर्पित किया है। इसलिए गणतंत्र दिवस हमारे लिए और हमारे राष्ट्र के लिए एक महत्त्वपूर्ण दिवस है और इससे हर साल बड़े ही आनंद के साथ हमें मिलकर मनाना चाहिए।

अथवा

(2) विश्व योग दिवस

(i) प्रस्तावना- बिना किसी समस्या के जीवन भर तंदुरुस्त रहने का सबसे अच्छा, सुरक्षित, आसान और स्वस्थ तरीका योग है। इसके लिए केवल शरीर के क्रियाकलापों और श्वास लेने के सही तरीकों का नियमित अभ्यास करने की आवश्यकता है। यह शरीर के तीन मुख्य तत्त्वों; शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के बीच संपर्क को नियमित करता है। यह शरीर के सभी अंगों के कार्यकलाप को नियमित करता है और कुछ बुरी परिस्थितियों और अस्वास्थ्यकर जीवन-शैली के कारण शरीर और मस्तिष्क को परेशानियों से बचाव करता है। यह स्वास्थ्य, ज्ञान और आन्तरिक शान्ति को बनाए रखने में मदद करता है। अच्छे स्वास्थ्य प्रदान करने के अलावा यह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है, ज्ञान के माध्यम से यह मानसिक आवश्यकताओं को पूरा करता है और आन्तरिक शान्ति के माध्यम से यह आत्मिक आवश्यकता को पूरा करता है, इस प्रकार यह हम सभी के बीच सामंजस्य बनाए रखने में भी मदद करता है।

(ii) योग से एकाग्रता की ओर- सुबह को योग का नियमित अभ्यास हमें अनगिनत शारीरिक और मानसिक बीमारियों से बचाने का कार्य करता है। यह मानव मस्तिष्क को तेज करता है, बौद्धिक स्तर को सुधारता है और भावनाओं को स्थिर रखकर उच्च स्तर की एकाग्रता में मदद करता है। अच्छाई की भावना मनुष्य में सहायता की प्रकृति का निर्माण करती है और इस प्रकार, सामाजिक भलाई को बढ़ावा देती है। एकाग्रता के स्तर में सुधार ध्यान में मदद करता है और मस्तिष्क को आन्तरिक शान्ति प्रदान करता है। योग प्रयोग किया गया दर्शन है, जो नियमित अभ्यास के माध्यम से स्व-अनुशासन और आत्म जागरूकता को विकसित करता है।

(iii) विश्व योग दिवस- योग का अभ्यास किसी के भी द्वारा किया जा सकता है, क्योंकि आयु, धर्म या स्वस्थ परिस्थितियों से परे है। यह अनुशासन और शक्ति की भावना में सुधार के साथ ही जीवन को बिना किसी शारीरिक और मानसिक समस्याओं के स्वस्थ जीवन का अवसर प्रदान करता है। पूरे संसार में इसके बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने, संयुक्त संघ की सामान्य बैठक में 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रुप में मनाने की घोषणा करने का सुझाव दिया था, ताकि सभी योग के बारे में जाने और इसके प्रयोग से लाभ लें। योग भारत की प्राचीन परम्परा है, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी और योगियों के द्वारा तंदुरुस्त रहने और ध्यान करने के लिए इसका निरन्तर अभ्यास किया जाता है। निकट जीवन में योग के प्रयोग के लाभों को देखते हुए संयुक्त संघ की सभा ने 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस या विश्व योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा कर दी है।

(iv) योग के प्रकार- योग कई तरह के होते हैं जैसे राजयोग, कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग और हठ योग लेकिन जब ज्यादातर लोग भारत या विदेशों में योग के बारे में बात करते हैं, तो उनका आमतौर पर हठ योग होता है, जिसमें ताड़ासन, धनुषासन, भुजंगासन, कपालभांति और अनुलोम-विलोम जैसे कुछ व्यायाम शामिल होते हैं। योग पूरक या वैकल्पिक चिकित्सा की एक महत्त्वपूर्ण प्रणाली है।

हम योग से होने वाले लाभों की गणना नहीं कर सकते हैं, हम इसे केवल एक चमत्कार की तरह समझ सकते हैं, जिसे भगवान ने मानव प्रजाति को उपहार के रूप में प्रदान किया है। यह हमारी शारीरिक तंदुरुस्ती को बनाए रखता है, तनाव को कम करता है, भावनाओं को नियंत्रित रखते हुए नकारात्मक विचारों को भी नियंत्रित करता है। जिससे हममें भलाई की भावना, मानसिक शुद्धता, और आत्मविश्वास विकसित होता है। योग के अनगिनत लाभ हैं, हम यह कह सकते हैं कि योग मानवता को मिला हुआ एक ईश्वरीय वरदान है।

अथवा

(3) मातृ दिवस

(i) प्रस्तावना- हर व्यक्ति के सफलता के पीछे सबसे पहले माँ की परवरिश होती है। इसलिए एक माँ को सम्मान और आदर देने के लिये हर वर्ष एक वार्षिक दिवस के रूप में मातृ दिवस को मनाया जाता है। ये आधुनिक समय का उत्सव है जिसकी उत्पत्ति उत्तरी अमेरिका में माताओं को सम्मान देने के लिये हुई थी। बच्चों से माँ के रिश्तों में प्रगाढ़ता बढ़ाने के साथ ही मातृत्व को सलाम करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। पूरे विश्व के विभिन्न देशों में अलग-अलग तारीखों पर हर वर्ष मातृ दिवस को मनाया जाता है। भारत में, हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को मातृ दिवस मनाया जाता है।

(ii) मातृ दिवस का इतिहास- देखा जाए तो मातृ दिवस का इतिहास सदियों पुराना एवं प्राचीन है। यूनान में बसंत ऋतु के आगमन पर रिहा हुए परमेश्वर की माँ को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता था। 16वीं सदी में इंग्लैंड का ईसाई समुदाय ईशु की माँ मदर मेरी को सम्मानित करने के लिए यह दिवस को त्योहार के रूप में मनाये जाने की शुरुआत हुई। 'मदर्स डे' मनाने का मूल कारण समस्त माताओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है। इस दिवस को आधिकारिक बनाने का निर्णय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वूडरो विलसन ने 08 मई, 1914 को लिया। 08 मई, 1914 में अन्ना की कठिन मेहनत के बाद तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने और माँ के सम्मान में एक दिन के अवकाश की सार्वजनिक घोषणा की। वे समझ रहे थे कि सम्मान, श्रद्धा के साथ माताओं का सशक्तिकरण होना चाहिए, जिससे मातृत्व शक्ति के प्रभाव से युद्धों की विभीषिका रुके। तत्पश्चात् हर वर्ष मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है।

(iii) मातृ दिवस क्यों मनाया जाता है- हर साल मई माह (महीने) के दूसरे रविवार के दिन मातृ दिवस मनाया जाता है। मातृ दिवस मनाने के कई कारण है। माँ को सम्मान और आदर देने के लिये हर वर्ष एक मातृदिवस मनाया जाता है। एक माँ की अपने परिवार के प्रति संघर्ष को सम्मान देने के लिए हर साल ये दिवस मनाया जाता है। माँ की ममता का कोई मोल नहीं है इस ममता को बच्चों द्वारा आदर एवं सम्मान देने के लिए तथा अपनी माँ को एक दिन की सभी कार्यों से मुक्त करने के लिए यह एक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

(iv) मातृ दिवस का महत्व- भारत एक महान संस्कृति और परंपराओं का देश है जहाँ लोग अपनी माँ को पहली प्राथमिकता देते हैं। इसलिये, हमारे लिये यहाँ मातृ दिवस का उत्सव बहुत मायने रखता है। ये वो दिन है जब हम अपनी माँ के प्यार, देखभाल, कड़ी मेहनत और प्रेरणादायक विचारों को महसूस करते हैं। हमारी माँ हमारे लिये प्रेरणादायक और पथप्रदर्शक शक्ति के रूप में है जो हमें हमेशा आगे बढ़ने में और किसी भी समस्या से उभरने में मदद देती है। यही इस दिन के महत्ता को दर्शाता है।

हर व्यक्ति के सफलता के पीछे सबसे पहले माँ की परवरिश होती है। इसलिए एक माँ को सम्मान और आदर देने के लिये हर वर्ष एक वार्षिक दिवस के रूप में मातृ दिवस को मनाया जाता है। ये वो दिन है जब हम अपनी माँ के प्यार, देखभाल, कड़ी मेहनत और प्रेरणादायक विचारों को महसूस करते हैं। हमारे जीवन में वो एक महान इंसान है जिसके बिना हम एक सरल जीवन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। वो एक ऐसी व्यक्ति हैं जो हमारे जीवन को अपने प्यार और संघर्ष के साथ बहुत आसान बना देती है। इसलिए इसे हर वर्ष एक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अथवा

(4) एक रेल-दुर्घटना

(i) आकस्मिक दुर्घटना का मेरा अनुभव- मैं दिवाली की छुट्टियाँ मनाने अपने चाचा के यहाँ नागपुर जा रहा था। हमारे आरक्षित डिब्बे में पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे सभी तरह के यात्री थे। सबके चेहरों पर यात्रा का आनंद था। कुछ यात्री बातचीत में मग्न थे, कुछ यात्री अखबार या साप्ताहिक पढ़ने में तल्लीन थे और कुछ ताश का आनंद ले रहे थे। गाड़ी धक्-धक्-धक् करती हुई दौड़ रही थी। धीरे-धीरे बाहर अँधेरा गहराया। अचानक एक जोर का धक्का लगा। मैं अपनी जगह से नीचे लुढ़क पड़ा। उस धक्के से सारे डिब्बे के यात्री, संदूक, सामान, बिस्तर, पानी की सुराही आदि को उलट-पुलट कर दिया। किसी का सिर बेंच से टकराया, तो कोई फर्श पर आ गिरा। पूरे डिब्बे में मानो भूकंप-सा आ गया।

(ii) यात्रियों की दशा- गाड़ी एक झटके के साथ रुक गई। रोने-चिल्लाने की आवाजें गहरी शांति को चीरने लगीं। सद्भाग्य से मुझे कोई चोट नहीं आई थी पर कई यात्रियों की हालत गंभीर थी। किसी के सिर से रक्त बह रहा था, किसी के हाथ की हड्डी टूट गई थी, तो कोई ऊपर से किसी संदूक के गिरने से घायल हो गया था। औरतें और बच्चे बुरी तरह से चिल्ला रहे थे। आसपास का सारा वातावरण चीखों की आवाजों से भर गया था। पल में हुए इस प्रलय ने सबको विस्मित, भयभीत और चिंतित कर दिया था।

(iii) दुर्घटना का कारण- पता चला कि अकोला स्टेशन से कुछ पहले ही हमारी गाड़ी पटरी बदलते वक्त सामने से आती हुई तेज गाड़ी से टकरा गई थी। अगले दो डिब्बे उस गाड़ी के टकराने से उलट गए थे। हमारा डिब्बा बहुत पीछे था, इसलिए बच गया था। पटरी के दोनों तरफ भारी कोलाहल हो रहा था। पुलिस और सुरक्षा-दल के लोग संकटग्रस्त यात्रियों की मदद करने के लिए आ पहुँचे थे।

(iv) यात्रियों की सहायता- सुरक्षित यात्रियों के लिए एक बस आकर रुकी और उन्हें उसमें बैठकर अकोला स्टेशन पर जमा होने का आदेश दिया गया। बस में बैठते हुए मैंने देखा कि वहाँ एंबुलेंस की कतार लग गई थी और डॉक्टरों का एक दल भी आ पहुँचा था। घायलों की दर्दभरी कराहें वातावरण में फैल रही थीं और लाशों की संख्या बढ़ती जा रही थी।

इसके बाद मैं वहाँ से अगली ट्रेन द्वारा दूसरे दिन नागपुर पहुँचा। अखबार में दुर्घटना के समाचार पढ़कर चाचा-चाची को बड़ी चिंता हो रही थी, पर मुझे भला-चंगा देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। कई दिनों तक उस भयानक दुर्घटना का भयंकर दृश्य मेरी आँखों के सामने घूमता रहा।

UTKARSH CLASSES

UTKARSH
CLASSES

#अब कामयाबी पर होगा सबका हक़

UTKARSH CLASSES | CLASS 6-12

Smart e-Learning Programme

उत्कर्ष एप से घर बैठे कीजिए ऑनलाइन ट्यूशन और बनिए क्लास में टॉपर

उत्कर्ष एप में गुणवत्तामूलक स्कूली शिक्षा के ऑनलाइन कोर्सेस नाममात्र के शुल्क में उपलब्ध

QR Code Scan कर आज ही 'उत्कर्ष एप' डाउनलोड करें

Academic Session 2022-23

Class VI-VIII	~~₹10,000~~	₹1999	CBSE | RBSE & Other 7 State Boards
Class IX-X	~~₹15,000~~	₹2999	
Class XI-XII	~~₹18,000~~	₹3499	

₹1200/- per subject Live	₹600/- per subject Recorded

Class XI-XII (Science, Commerce & Arts)

- **LIVE & Recorded Classes**
- **English & Hindi Medium**

आज से ही बनाएँ अपनी पढ़ाई को और बेहतर Utkarsh Online Tuition के साथ

उत्कर्ष एप ही क्यों ?

- विख्यात व अनुभवी विषय-विशेषज्ञों की टीम
- फैकल्टी द्वारा हस्तलिखित पैनल PDF & e-Notes
- नियमित टेस्ट द्वारा मूल्यांकन (MCQs & Self Assessment)
- टॉपिकवाइज़ क्विज़ एवं उनका वीडियो व्याख्यान
- Live Poll during interactive classes.
- 4K डिजिटल पैनल पर इंटरैक्टिव कक्षाएँ
- 360° Rapid Revision.

15 M + SUBSCRIBERS

2 M + SUBSCRIBERS

10 M + DOWNLOADS

1 M + FOLLOWERS

UTKARSH CLASSES

www.utkarsh.com support@utkarsh.com